AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम विकास में शिक्षकों की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. कमलेश चंद्र प्रसाद
प्राचार्य, शिक्षा विभाग
साई नाथ विश्वविद्यालय,
रॉची, झारखंड, भारत

शोध सार

अध्यापक शिक्षा छात्र शिक्षकों को आवश्यक ज्ञान, कौशल हासिल करने तथा सकारात्मक दृष्टिकोण, मूल्यों और विश्वासों को विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह मंच पाठ्यक्रम की मदद से किया जा सकता है। किसी भी संस्था में निर्मित शिक्षक की गुणवत्ता हमेशा उनके प्रशिक्षण अवधि के दौरान उनके द्वारा दी गई पाठ्यक्रम पर निर्भर करती है। पाठ्यक्रम तैयार करने में पाठ्यक्रमों के विभिन्न शोधों और शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका की समीक्षा करने के बाद, पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया को विकेंद्रीकृत किया गया। पाठ्यक्रम तैयार करने और पाठ्यपुस्तकों को तैयार करने की प्रक्रिया विकेन्द्रीकृत की जाती है ताकि इन कार्यों में शिक्षकों की भागीदारी में वृद्धि हो सके। विकेंद्रीकरण का मतलब राज्य/जिले के भीतर अधिक स्वायत्तता होना चाहिए।

मुख्य शब्द

शिक्षक, शिक्षा, पाठ्यक्रम.

पाठ्यचर्या छात्रों के सर्वांगीण विकास का सबसे अच्छा माध्यम है। शिक्षक पाठ्यक्रम और छात्रों के मध्य मध्यस्थ हैं। वह छात्रों तथा शैक्षिक संस्थानों की विभिन्न जरूरतों को जानता है। शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम द्वारा बनाए जाते है। पाठ्यक्रम विकास एक गतिशील प्रक्रिया है।

इस पत्र के उद्देश्य हैं:

1. पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया को व्याख्या करना।
2. पाठ्यक्रम विकासकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका की व्याख्या करना।
3. पाठ्यक्रम के विकास के संदर्भ में सर्वोत्तम प्रथाओं को सूचित करना।

सबसे पहले, पाठ्यक्रम के अर्थ के बारे में चर्चा करते है।

पाठ्यक्रम का अर्थ

पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी भाषा के Curriculum शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Curriculum शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी में लिया गया है तथा यह लैटिन शब्द 'Currrer' (कुर्रेर) से बना है। 'Currrer' का अर्थ है 'दौड़ का मैदान।' दुसरे शब्दों में 'Curriculum' वह क्रम है जिसे किसी व्यक्ति को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिये पार कराना होता है। अतः पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षा व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है।

विद्यालयों का प्रमुख कार्य बालकों को शिक्षा प्रदान करना होता है और इसको पूर्ण करने के लिये वहाँ पर जो भी कार्य किया जाता है उसे पाठ्यक्रम का नाम दिया गया है। इस सम्बन्ध में अमेरिका के 'National Education Association' ने अपनी टिप्पणी इस प्रकार की है:

"विद्यालय का कार्य क्या है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर कई बार अनेक ढंग से दिया जा चुका है फिर भी इस प्रश्न बार–बार उठाया जाता है। कारण स्पष्ट है, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर अन्तिम रूप से कभी दिया भी नहीं जा सकता है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर प्रत्येक समाज एवं प्रत्येक पीढ़ी की बदलती हुई प्रकृति एवं आवश्यकताओं के अनुसार बदलता रहता है।"

डीवी के दृष्टि से, "सीखने का विषय या पाठ्यक्रम; पदार्थों, विचारों, और सिद्धान्तों का चित्रण है जो निरन्तर उद्देश्यपूर्ण क्रियान्वेषण से साधन या बाधा के रूप आ जाते हैं।"

शिक्षक शिक्षा में पाठ्यक्रम का महत्व

पाठ्यक्रम शिक्षक द्वारा व्यवहृत निर्देशक पाठों का मार्गदर्शन कराता है। पाठ्यक्रम परिभाषित करता है कि शिक्षार्थी क्या सीखता है एवं जब शिक्षार्थी पाठों से सिखता है तब मार्ग प्रस्तुत करता है। पाठ्यक्रम छात्रों की प्रगति का आंकलन करने के लिए शिक्षक को विचारों और रणनीतियों प्रदान करता है। अगले स्तर पर जाने के लिए छात्र को कुछ शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। पाठ्यक्रम के मार्गदर्शन के बिना, शिक्षक यह निश्चित नहीं हो सकते कि उन्होंने अगले स्तर पर आवश्यक ज्ञान या छात्र की सफलता के लिए अवसर प्रदान किया है, चाहे स्तर हाई स्कूल, कॉलेज या कैरियर भी क्यों ना हो।

पाठ्यक्रम छात्रों को अपने शिक्षण पर कुछ निजी नियंत्रण हासिल करने, अपने सेमेस्टर की योजना बनाने, और प्रभावी ढंग से अपने समय का प्रबंधन करने में मदद करता है और सक्रिय शिक्षण का वर्णन भी करना है। छात्रों को अक्सर सही जानकारी के अधिग्रहण के रूप में सीखने की कल्पना करती है, लेकिन उन्हें पता नहीं होता कि इस प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने का क्या मतलब है, जो कि उसके स्मृतिकरण और यादों से परे है।

पाठ्यक्रम विकास

पाठ्यक्रम विकास, जरूरतों का आंकलन करने, उद्देश्य तैयार करने तथा शिक्षण के अवसरों और मूल्यांकन के विकास की प्रक्रिया है। यह योजनाबद्ध पाठ्यक्रम, शिक्षा–विज्ञान, अनुदेशन और प्रस्तुति प्रणाली बनाने की प्रक्रिया भी है। यह एक पद है जिसका उपयोग पाठ्यक्रम के लिए निर्देश के सही दिशा निर्देशों की स्थापना और स्थापित करने की प्रक्रिया को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। यह उन तरीकों का वर्णन करता है जिसमें शिक्षण और विभिन्न प्रशिक्षण संगठनों की योजना और मार्गदर्शन सीखाते है जो समूह में हो सकता है या व्यक्तिगत के रूप में भी हो सकता है।

पाठ्यक्रम विकास के निर्धारक तत्त्व

पाठ्यक्रम के निर्धारण के लिए पाठ्यक्रम के ज्ञान की बाहरी सीमाएं निर्धारित की जाती हैं और परिभाषित करती हैं कि किस प्रकार जानकारी के वैध स्रोत का गठन किया गया है, जिसमें पाठ्यक्रमों के क्षेत्र से संबंधित सिद्धांतों, नीतियों और विचारों को स्वीकार किया गया है। पाठ्यक्रम के निर्धारक तत्व क्षेत्र की बाहरी सीमाओं को दर्शाते हैं। पाठ्यक्रम के निर्धारणकर्ताओं को आमतौर पर दार्शनिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाता है।

1. दार्शनिक दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य आत्म–प्राप्ति और मूल्यों को प्राप्त करना है।
2. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, शिक्षा का उद्देश्य भौतिक, मानसिक, और भावनात्मक लक्षणों को विकसित करना है।
3. सामाजिक दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखना है, जो एक सामाजिक अनुक्रम स्थापित करता है, जो सांस्कृतिक विरासत के साथ–साथ लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए है।

पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया

पाठ्यक्रम विकास एक गतिशील प्रक्रिया है जो समाज और शिक्षा प्रणाली के जरूरत के अनुसार बदलती है। पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया में कई अवस्थाएं शामिल हैं जैसे नियोजन, तैयारी, डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन, मूल्यांकन, संशोधन, और सुधार।

पारंपरिक रूप से पाठ्यक्रम विकास को औपचारिक संस्थागत अवस्थान में शिक्षण और सीखने की निरंतर प्रक्रिया के लिए योजना के रूप में देखा गया है। पाठ्यक्रम विकास व्यवस्थित और गतिशील प्रक्रिया है जो समय और स्थान के प्रति संवेदनशील है जिसमें तैयारी, विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के कदम शामिल हैं।

पाठ्यक्रम विकास में चुनौतियां

पाठ्यक्रम विकास में विविध चुनौतियां का सामना करना होता है, लेकिन सामान्य तौर पर उन्हें तीन प्रकार, वैश्विक चुनौतियों (बाहरी), शिक्षा प्रणालियों की आंतरिक चुनौतियों और क्षेत्र के लिए चुनौतियों का वर्गीकरण किया जाता है।

बाहरी चुनौतियों के संबंध में, पाठ्यक्रम योजनाकारों को आठ महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं पर प्रतिक्रिया देना चाहिएः वैश्वीकरण की प्रक्रिया, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की त्वरित गति, कार्य क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन, सामाजिक असमानताओं में वृद्धि, लोकतंत्र और मानव अधिकार की प्रगति, बहुसांस्कृतिकता, असुरक्षा की भावना और नैतिक गिरावट।

इसके अलावा, तीसरी प्रकार की चुनौतियों का सारांश संक्षेप में किया जा सकता है. सार्वभौमिक साक्षरता, अत्यधिक कुशल मानव संसाधनों की कमी, आधुनिकता की आकांक्षा के साथ शिक्षा के परंपरागत अभिविन्यास का मिलान करना, विद्यालयों का निजीकरण, अर्थव्यवस्था का विविधीकरण, शैक्षिक अनुसंधान में और अधिक निवेश करने की आवश्यकता।

पाठ्यक्रम विकास में शिक्षक की भूमिका

शिक्षक शिक्षकों की शिक्षा के सभी हितधारकों की जरूरतों को जानते हैं। शिक्षक शिक्षार्थी के मनोविज्ञान को समझ सकते हैं। शिक्षक शिक्षण विधियों और शिक्षण रणनीतियों के बारे में जानते हैं। सीखने के परिणामों के मूल्यांकन के लिए शिक्षक मूल्यांकनकर्ता के रूप में भी भूमिका निभाते हैं इसलिए शिक्षकों में योजनाकार, डिजाइनर, प्रबंधक, मूल्यांकनकर्ता, शोधकर्ता, निर्णय निर्माता और प्रशासक के कुछ गुण होना चाहिए। शिक्षक पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया के प्रत्येक चरण के लिए संबंधित भूमिका निभाते हैं।

पाठ्यक्रम की योजना में दर्शन, सामाजिक शक्तियों, जरूरतों, लक्ष्यों और उद्देश्यों, ज्ञान का उपचार, मानव विकास, सीखने की प्रक्रिया और निर्देश, और निर्णय का विश्लेषण शामिल है। पाठ्यक्रम तैयार करने में व्यवस्थित आँकडे, सामग्री चयन, संग्रह, मूल्यांकन, संगठन भी शामिल है। पाठ्यक्रम विकास चरणों में शिक्षा संबंधी विकास, सामग्री और मीडिया विकास, शिक्षण और परीक्षण के तरीके शामिल हैं।

पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में प्रत्येक विषय के अनुदेशात्मक योजना शामिल होती है जो एक सेमेस्टर में पूर्ण हो जाती है तथा समय सारिणी के अनुसार पाठ की योजना, उचित मीडिया का प्रयोग करना, सीखने के संसाधन प्रदान करना, कक्षा सीखने के अनुभवों को बढ़ावा देना, प्रगतिशील परीक्षण भी शामिल होते है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन में छात्रों के शिक्षक मूल्यांकन, शिक्षक के छात्र मूल्यांकन तरीकों का सत्यापन, परीक्षाओं के मूल्यांकन, क्षेत्र के दौरान सीखने के परिणामों की जांच करना, पाठ्यचर्या की समीक्षा/सुधार/परिवर्तन/संशोधन शामिल होते है। तैयार पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने के बाद यदि यह पाया जाता है कि पाठ्यक्रम संतोषजनक नहीं है, फिर विकासात्मक चरण में संशोधन और सुधार करने के लिए बदलता है।

निष्कर्ष

पाठ्यक्रम विकास बौद्धिक और अनुसंधान गतिविधि है इसे योजना, विकास, डिजाइन, कार्यान्वयन, मूल्यांकन और चरण में सुधार के लिए निपुण कार्यकर्ताओं की जरूरत है। शिक्षक, अध्यापक शिक्षा के सभी हितधारकों की जरूरतों को जानते हैं। शिक्षक शिक्षार्थी के मनोविज्ञान को समझ सकते हैं। शिक्षक शिक्षण विधियों और शिक्षण रणनीतियों के बारे में जानते हैं। सीखने के परिणामों के मूल्यांकन के लिए शिक्षक मूल्यांकनकर्ता के रूप में भी भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों को योजनाकार, डिजाइनर, प्रबंधक, प्रोग्रामर, क्रियान्वयनकर्ता, समन्वयक, निर्णय निर्माता, मूल्यांकनकर्ता, शोधकर्ता आदि के रूप में काम किया जा सकता है। अतः शिक्षक पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Barnett, R.. Parry, G., & Coate, K. (2001). Conceptualising curriculum change. *Teaching in Higher Education.* 6(4), 435-449.
2. Best J. W. & Kahn. J.V.(2003) *Research in educational* (9us ed.), New Delhi prentice hall of India Pvt. Ltd.
3. Bhattacharya, S.K. (2006) Educational Technology. Chandigarh: Abhishek Publications Bhatawadekar. S.(2008) retrieved formhttp://www.citehr.com/25619-quality-circles.html
4. Bruner. J. (1996). *The process of education. Cambridge,* MA: Harvard University Press.
5. Jacobs, Buch. M.B.(Ed.) forth survey of researches in education new Delhi :NCERT
6. Devi. N.S. (2005). Assessment of attitude towards teaching, Edu-tracks vol.4.no. 12. India: Neelkamal publications.
7. Ediger. Marlow (1996) *Science curriculum.* New Delhi: Discovery publishing house
8. Edward Sallis. (2002): *Total Quality Management in Education;* London: Stylus Publishing Inc.
9. H. H. (1997). *Mapping the big picture: Integrating curriculum and assessment K-12.* Alexandria, VA: Association for Supervision and Curriculum Development.
10. Konnur P.V.. Joshi A.N.(2009) retrieve from http://journal-archieves 15.webs.com/271-277.pdf
11. Muhammad Hamid.(2012), vol.3 no. 10, retrieve from http://www.ijcrb.webs.com
12. National Curriculum Framework for Teacher Education (2009) New Delhi: National Council for Teacher Education
13. Parker. J. (2003). Reconceptualising the curriculum: From co modification to transformation. *Teaching in Higher Education,* 8(4), 529-543.
14. Stenhouse. L. (1975) *An introduction to Curriculum Research and Development.* London: Heineman.
15. Verma. S.(2012): Curriculum planning and Development; New Delhi: Astha publishers.

——==00==——